इतिहासकार : अबुल फजल

डॉ0 मनोज कुमार*

इतिहास अतीत का आईना होता है। गालब्रेथ के शब्दों में ''इतिहास अतीत का वह अंश है जिसे हम जान पायें हैं या जान पाते हैं। वस्तुतः इतिहास समष्टि की अपने अतीत की स्मृति है। पर जब कोई व्यक्ति इस स्मृति का वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर संयोजन करता है, उसे लिपिबिद्ध करता है या यूँ कहें कि अतीत की पुनर्रचना करता है, तो इतिहास का जन्म होता है। विज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण इतिहास लेखन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का एक प्रवाह आया और प्रो0 जे0 जे0 बरी ने यह घोषित किया कि इतिहास एक विज्ञान है न उससे कम न ज्यादा। इस प्रयास में जब सीमा का अतिक्रमण होने लगा तो प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। वीयर्ड ने वैज्ञानिक इतिहास पर करारी चोट की और राबिन्सन ने कहा कि अब तक वर्त्तमान अतीत का शिकार होता रहा है, अब समय आ गया है कि उसे उलटकर अतीत का वर्त्तमान के लिए उपयोग हो। इन दो अतिवादी दृष्टियों में प्रमुख अंतर यह है कि एक का केन्द्र अतीत में स्थिर होता है जबकि दूसरे का वर्त्तमान में। वस्तुतः तथ्यों से विहीन इतिहासकार आधारहीन होता है तथा इतिहासकार के बिना तथ्य मृत व अर्थहीन। प्रसिद्ध इतिहासकार ई0 एच0 कार ने ठीक ही कहा है कि इतिहास इतिहासकार और उसकेतथ्यों की क्रिया प्रतिक्रिया की एक अनवरत प्रक्रिया है, अतीत व वर्त्तमान के बीच एक अन्तहीन संवाद है।1

उपर्युक्त उद्धरण के परिपेक्ष्य में अबुल फजल के इतिहास लेखन पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उसने अकबरनामा और आइने–अकबरी जैसी असाधारण ऐतिहासिक पुस्तक की रचनाकर महान इतिहासकार की श्रेणी में स्थापित हो गया। "अबुल फजल अगर कुछ न करते और केवल अपनी लेखनी को ही चलाकर चले गए होते, तो भी वह एक अमर साहित्यकार माने जाते। उन्होंने कई विशाल और अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखें हैं जो आज भी हमें उनके काल और विचारों के बारे में बहुत सी बातें मार्ग प्रदर्शन करते हैं। अकबरनामा और आइने–अकबरी उनके अद्‌भुत और अमर ग्रन्थ है।"2 सही अर्थो में अबुल फजल खुदा के द्वार से अपने साथ लेखन कला को लाया था। साहित्य के विद्वान बासन्ती वयार में वनउपवन में खिले रंग बिरंगे बासन्ती फूलों और उसकी महक तथा चमक–दमक से अपने ग्रंथों में सौरभ और सुरभि लाते रहे हैं वहीं अबुल फजल ने सीधे सादे शब्दों के माध्यम से, जो ग्रंथ उपस्थित किया है उसमें रंग भरने वाला चित्रकार आकर कलम लगा दे तो उसके हाथ कलम हो जाये। वह लेखन कला का ईश्वर है और अपने विचारों से जैसी सृष्टि चाहता है, शब्दों के ढाँचें में ढाल देता। मजा यह है कि जिस अवस्था में लिखता है नया ढंग लाता है, और जितना ही लिखता जाता है, उसकी भाषा का ओज उतना ही बढ़ता और चढ़ता चला जाता है। संभव नहीं कि मन में किसीप्रकार की शिथिलता का अनुभव हो। उसकी शोभा और आनंद कुछ मूल रूप में विशेष रूप से दिखाई पड़ती है।3 दरबारे अकबरी में और तत्कालीन भारतवर्ष में देशी और विदेशी विद्वान तथा पंडित का जमघट था। उन विद्वानों की भीड़ को चीरकर वह सबसे आगे निकल जाता था। चूँकि कौन किसे आगे बढ़ने देना चाहता था? अबुल फजल के काल में अहमद राजी ने तजकीराहत अकलीन नाम की पुस्तक की रचना की थी। उसने भी अबुल फजल की बुद्धि, विद्या और लेखन कला की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। अब हम उनकी पुस्तकों का निम्नवत् रूप से परीक्षण करेंगे–

(1) आइने–अकबरी– अबुल फजल ने तीन खंडों में अकबरनामा की रचना की। इसमें प्रथम एवं द्वितीय खण्ड आइने–अकबरी है। अकबरनामा के प्रथम खण्ड में तैमूर वंश के संबंध में बहुत ही संक्षिप्त विवरण आया है किंतु बाबर के संबंध में विस्तृत इतिहास लेखन किया गया है और हुमायूँ का इतिहास भी विस्तृत रूप में अंकित किया गया है। दूसरे खण्ड में अकबर के शासनकाल के 17 वर्षो का इतिहास अंकित किया गया है। अकबर 13 वर्ष की अवस्था में सत्तासीन हुआ था, इसीलिए 13 और 17 मिलाकर उसके जीवन का 30 वर्षो का इतिहास अकबरनामा के दूसरे खण्ड में वर्णित है। अकबरनामा के खंड तीन में बादशाह अकबर के शासन के 18वें वर्ष से 46वें वर्ष का इतिहास अंकित किया गया है। अकबर के शासन के 47वें वर्ष से आगे के इतिहास को इनायतउल्लाह ने लिखकर उसे पूर्ण किया है। पहले खंडकी भूमिका में अबुल फजल ने लिखा था – " मैं हिंदी हूँ फारसी में लिखना मेरा काम नहीं । बड़े भाई के भरोसे यह काम शुरू किया था, पर अफसोस थोड़ा ही लिखा था कि उनका देहान्त हो गया। सिर्फ 10 साल का हाल उन्होंने देख पाया था।"

(2) अकबरनामा – आइने अकबरी का तीसरा खंड अबुल फजल ने 1597ई0–98ई0 में लिखा था। इसी किताब को आधार मानकर भारत में अंग्रेज सरकार ने गजेटियर का निर्माण किया था। सही अर्थो में अकबरनामा का तृतीय खंड अकबर के विस्तृत साम्राज्य का गजेटियर है। इस पुस्तक में अकबर के काल के सम्पूर्ण साम्राज्य का विस्तृत इतिहास, उसके प्रशासन तंत्र, आय–व्यय, सूबा, सरकार, परगना, नदी–नाले, प्रमुख उपज, साम्राज्य के महत्वपूर्ण स्थान आदि का इतिहास अंकित है। साथ ही साथ सैनिक–असैनिक प्रबन्ध, अमीरों की सूची और हैसियत, पंडित, कलाकार, दस्तकार, विद्वान, संत, फकीर, मंदिर एवं मस्जिदों का भी चित्रण किया गया है। इतना ही नहीं वरन् तत्कालीन भारत के लोगों का धर्म,

***ग्राम महद्यीपुर, पोस्ट ढ़ोली, थाना सकरा जिला–मुजफ्फरपुर**

रीति–रिवाज की भी विस्तृत चर्चा आयी है। अकबरनामा की भाषा पूर्णतः साहित्यिक है जबकि आइने अकबरी में प्रयुक्त भाषा, सामान्य किंतु प्रभावषाली है। तत्कालीन भारतीय आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों की जानकारी के लिए यह अद्‌भुत ग्रंथ है।

(3) मुकातिबाते अल्लामी–अल्लामी का अर्थ महान् विद्वान होता है। अबुल फजल को अल्लामी कहा जाता था। इस किताब में उनके पत्रों का संकलन है। पुस्तक के प्रथम खण्ड में वैसे पत्रों का संग्रह है जिसे बादशाह अकबर ने ईरान और तुरान के बादशाहों के नाम अबुल फजल से पत्र लिखवाये थे। इसमें बादशाह के आदेश भी अंकित है। समरकन्द का शासक उजबक सुल्तान अब्दुल्ला बहुत ही प्रतापी खान और अकबर का खानदानी दुश्मन भी था। वह कहता था कि अकबर की तलवार तो नहीं देखी, लेकिन मुझे अबुल फजल की कलम से डर लगता है। इस पुस्तक की द्वितीय खंड में वैसे पत्रों का संग्रह है जिसे अबुल फजल ने दरबार के अमीरों, अपने दोस्तों और सगे संबंधियों को पत्र लिखे थे। पुस्तक के तीसरे खण्ड में अपने से पूर्व रचनाकारों की पुस्तकों की साहित्यिक समालोचना अबुल फजल ने की है।

(4) अय्यारेदानिश–यह वही पुस्तक है जिसे हम संस्कृत में पंचतंत्र के नाम से जानते है जिसकी विश्व प्रसिद्धि है। 6ठीं शताब्दी में नौशेरवाँ ने इसका पहलवी भाषा में रूपान्तर कराया था, फिर अब्बासी खलीफों ने इसका अनुवाद अरबी में कराया फिर फारसी के आदि कवि रूदकी ने उसे कविता में रूपान्तरित किया। यही पर अनुवाद श्रृखंला में कामा और फुल स्टॉप नहीं हुआ वरन मुल्ला हुसैन ने फारसी में इसे अनुवादित कर भारत में प्रचारित किया। बादशाह अकबर को जब इस पुस्तक की जानकारी मिली तो वह मूल पुस्तक पंचतंत्र को मंगवाया उसे सुना, समझा और अबुल फजल को इसके अनुवाद का आदेष दिया। उसने पंचतंत्र को अय्यारेदानिश नाम से 1587–88 ई0 में अनुवादित किया, जिस पर मुल्ला बदायूँनी ने बादशाह अकबर कीतीखी आलोचना किया। उसने कहा कि अकबर को इस्लाम के हर चीज से घृणा है और हिन्दू शास्त्रों से बड़ा प्रेम है। इस सब के बाबजूद बादशाह ने अबुल फजल को आदेश दिया कि पंचतंत्र को साधारण, साफ नंगी फारसी में लिखो जिसमें उपमा, हाइफन, अतिशयोक्ति भी न हो और न अरबी वाक्य हो। तदनुसार अबुल फजल ने पंचतंत्र का अनुवाद कर अपना साहित्यिक गहराई का परिचय दिया।

(5) रूकआते अबुल फजल – यह पुस्तक अबुल फजल के छोटे पत्रों का संग्रह है। इसमें कुल 46 पत्रों को संग्रहित किया गया है, जिसमें एतिहासिक, भौगोलिक और अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों को सामान्य भाषा में अंकित किया गया है। अब्दुल खान, दानियाल, अकबर, मरियम मकानी (अकबर की माँ), शेख मुबारक, फैजी और उर्फी की बातें है।

(6) कश्कोल – भिक्षा पात्र को कश्कोल कहा जाता है जिसमें भिक्षाटन में प्राप्त विभिन्न वस्तुओं को रखा जाता है। तात्पर्य यह कि एक भिखारी को कहीं

पुलाव, कहीं चने, कहीं दाल तो कहीं रोटी की टुकड़ी मिलती है और उसे वह एक ही कश्कोल में रखता है। अबुल फजल को जीवन के जो भी सुक्तियाँ सुभाशित एवं सुन्दर संदेश मिले उसे वही एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया और उसका नाम कश्कोल अथवा भिक्षापात्र रखा। यह सूफी विद्वान इस ढंग से बिखरे मोतियों को चुनकर एक पात्र में डालकर उसे विद्वानों के लिए एक रत्न भण्डार बना दिया।

(7) रज्मनामा – यह महाभारत का अनुवाद है। इस पर दो जुज का खुतबा लिखा हुआ है।

इनके रचित ग्रंथ देखने से भी पता चलता है कि इनकी प्रकृति रूपी भूमि में श्रृंगार रस के विशय बहुत ही कम फूलते फलते थे। फूल, बलबल और सौंदर्य आदि से संबंध रखने वाले षेर आदि कहीं संयोगवश किसी विशेष कारण से लाने पड़ते थे तो विवश होकर लाते थे। इनकी तबियत की असल पैदावार आत्मोन्नति, आध्यात्म, दर्शन, उपदेश संसार की असारता और सांसारिक व्यक्तियों की कामभोग और वासनाओं के प्रति घृणा होती थी। इनके लेखों से यह भी विदित होता है कि, जो कुछ लिखते थे, वह एक बार कलम उठाकर बराबर लिखते चले जाते थे। सब बातें इनके मन से तुरंत प्रस्तुत होती थी। इन्हें अपने लेखों के लिए परिश्रम करना और पसीना बहाना नहीं पड़ता था। इनके पास दो ईश्वर दत्त गुण थे। एक तो विषयों तथा भावों की अधिकता और दूसरे भाव व्यक्त करने की शक्ति तथा शब्दों की उपयुक्तता। यदि ये दोनों बातें न होती, तो इनकी भाषा इतनी साफ और चलती हुई न होती ।4

अबुल फजल कवि नहीं, इतिहासकार थे। इतिहास लेखन में भी जो भाव, भाषा एवं शैली का प्रयोग उन्होंने किया उससे साहित्यिक सजीवता परिलक्षित होती है। लगता है कि भाषा पर उनकी पकड़ थी और सारगर्भित साहित्यिक लहजे में अपनी बातों को पुस्तकों में कहते गए। शोधार्थी को ऐसा प्रतीत होता है कि अबुल फजल ने स्वयं लिखा है कि आइने अकबरी और अकबरनामा लिखकर अपने ज्येष्ट भाई फैजी को संशोधन एवं सुधार हेतु दिया करते थे। अबुल फजल ने यह भी लिखा है कि फैजी ने सम्पूर्ण पुस्तक से गुजरने से पूर्व खुद गुजर गए। सर्वज्ञात है कि फारसी में अमीर खुसरों के बाद शैख फैजी बेताज बादशाह थे। ऐसा लगता है कि फारसी के कालिदास फैजी ने संशोधन के क्रम में अबुल फजल के तथ्यों को अपनी भाषायी जामा से अलंकृत किया हो, क्योंकि सम्पूर्ण ग्रन्थ की भाषा एक जैसी नहीं है। ऐसी बात नहीं कि अबुल फजल भाषा के धनी नहीं थे किंतु उनमें फैजी की कवित्व शक्ति समाहित नहीं थी। अस्तु आभासित होता है कि फैजी ने अबुल फजल के अकबरनामे को भाषा के प्रवाह में लाकर उसे और अधिक रोचक और दिलचस्प बना दिया है। यों इतिहासकारों ने ऐसी व्याख्या कहीं नहीं की है किंतु अबुल फजल के सम्पूर्ण ग्रन्थों की भाषा और फैजी द्वारा संशोधित किए गए अंश की भाषा में काफी भिन्नता है।

अबुल फजल के लेखन कला पर मआसिरूल–उमरा में लिखा गया है – "मुंशीयाना आडंबर और लेखन कला के चालों से उसकी शैली स्वतंत्र थी। शब्दों का ओज, वाक्य विन्यास की गूढ़ता, एक–एक शब्द की योजना, सुंदर संधियाँ और यमक का आश्चर्यजनक योग सभी ऐसे थे कि दूसरे को उसका नकल करना कठिन था। फारसी शब्दों का वह विशिष्ट प्रयोग करता था, जिससे कहा जाता है कि उसने निजामी की मसनवीं का गद्य कर डाला है। इस कला की उसकी अद्‌भुत योग्यता के कारण वह अपने सम्राट के विषय में बहुत सी बातें लिखा है जो अचरज पैदा करती है और जिन्हें बहुत मनन कर समझ सकते हैं।5

इसी प्रकार वी0 ए0 स्मिथ ने भी कहा –"As a writer Abul Fazl stands unrivalled. His style is grand and free from the technicalities and flimsy prettinesses of other munshis(Secretaries) and the force of his words, the structure of his sentences, the suitableness of his compounds, and the elegance of his periods are such that would be difficult for any one to initiate them."6

मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन ने विद्वानों और गुणीजन का ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में इसका पालन पोषण किया। इनमें से कुछ, जैसे जियाउद्दीन बरनी, निजामुद्दीन अहमद, अब्दुल कादिर बदायूँनी, मुहम्मद कासिम फरिश्ता और खफी खान, प्रसिद्ध इतिहासकार थे और उन्होंने मध्यकालीन इतिहास लेखन में बहुत योगदान किया। ये लोग ऐतिहासिक लेखन की पिछली परंपरा से प्रभावित थे। पर अपने–अपने अकादमीय प्रशिक्षण और अपनी–अपनी उपलब्धियों, समाज में अपनी–अपनी स्थितियों तथा धर्म और राजनीति के बारे में अपने–अपने विशिष्ट दृष्टिकोणों के अनुसार उन्होंने अपने–अपने ढंग से इतिहास लेखन का कार्य किया। मगर उनमें अबुल फजल की एक विषिश्ट स्थिति थी और मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक लेखन की परंपरा पर उन्होंने अपनी छाप छोड़ी।

एक विशिष्ट इतिहासकार की उपाधि के लिए उनका मुख्य दावा उनके लेखन में एक सुस्पष्ट बौद्धिक तत्व की उपस्थिति के कारण, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के विपरीत उनके, बिना किसी अपवाद के, बुद्धि का सहारा लेने के कारण, इतिहास के प्रति उनकी समकालीन इतिहास की व्याख्या के उनके प्रयास के कारण, उनकी एक नई पद्धति के कारण जिसे उन्होंने अपने कार्य के लिए प्रयुक्त किया और उनके गद्य की अनोखी उस्तादाना साहित्यिक शैली के कारण है। अंत में, एक इतिहासकार के रूप में उनकी सर्वप्रमुख उपलब्धि यह है कि अकबरनाम और आईन–ए– अकबरी में उन्होंने अकबर की महानता को एक ठोस और सुग्राहय रूप दिया।7

नोमान अहमद सिद्दिकी अबुल फजल से बदायूँनी को श्रेष्ठ मानते हैं क्योंकि

किसी काल के घटना क्रम की आत्मा को पकड़ने में वे ज्यादे सफल थे। निष्पक्षता के साथ घटनाक्रम के वर्णन को निजामुद्दीन और फरिश्ता ने जितनी सफलता के साथ अंजाम दिया है उतना अबुल फजल नहीं कर पाये हैं। वस्तुतः निजामुद्दीन और फरिश्ता ने अत्यंत निष्पक्षता के साथ तथ्यों को उजागर किया है। पुनः सिद्दिकी कहते हैं कि किसी को यह मानने में हिचक न होनी चाहिए कि समाज में, प्रशासनिक संस्थाओं में तथा इन दोनों के पारस्परिक संबंधों में परिवर्त्तन लाने वाले महत्वपूर्ण विकास क्रमों को देखने और दर्ज करने का श्रेय वास्तव में सूफी खान को जाना चाहिए। एक इतिहासकार के रूप में अबुल फजल में हो सकता है ये गुण न हों पर उन्हें छोड़कर कोई भी मध्यकालीन इतिहासकार इतिहास के प्रति बुद्धि संगत और धर्म निरपेक्ष दृश्टि अपनाने तथा तथ्य संग्रह के लिए एक नई पद्धति का प्रयोग करने और आलोचनात्मक पड़ताल के आधार पर उन्हें प्रस्तुत करने का दावा नहीं कर सकता। सही अर्थों में अबुल फजल के इतिहास लेखन की यह विशेषता थी।

अबुल फजल ने अपने ग्रंथ में इतिहास के विविध विद्याओं यथा राजनीति, संस्कृति, समाज और आर्थिक पक्षों का भी समावेश किया। तत्कालीन प्रांतीय शासन व्यवस्था एवं राजस्व व्यवस्था का भी बखूबी चित्रण किया। उसने सीधे जानी समझी बातों को एकत्रित नहीं किया अपितु ऐतिहासिक धरातल पर लाने के लिए उसकी समुचित जाँच की और कठोर परिश्रम से तथ्यों का संकलन कर प्रामाणिक इतिहास लेखन को दशा–दिशा दिया। अबुल फजल के लेखन में एक इतिहास दर्शन अर्थात् इतिहास की प्रकृति और उद्देश्य की एक निश्चित धारणा, इतिहास की व्याख्या के सिद्धांत तथा ऐतिहासिक तथ्यों के संग्रह और चयन के लिए एक आलोचनात्मक उपकरण भी पाया जा सकता है।8

विभिन्न उद्धरणों से आभासित होता है कि सचमुच अबुल फजल अव्वल दर्जे के इतिहासकार थे किंतु दरबारियों के इतिहास लेखन में उनकी सीमाओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। अबुल फजल नवरत्नों में एक थे और दरबार के साम्राज्य का इतिहास लिख रहे थे। इनके बड़े भाई शैख फैजी ने भी पद्य में अकबरनामा लिखा। इस तरह से भारत में कालिदास, वाणभट्ट, चन्दवरदायी और विद्यापति जैसे साहित्यकारभी हुए हैं जिन्होंने अपने राजाओं के इतिहास को काव्य रूप में प्रस्तुत किया है। स्वाभाविक है कि जिनकी रोटी और चाँदी के टुकड़े पर वे जीवित थे और परिवार का प्रतिपाल कर रहे थे, उनका इतिहास लेखन निश्चित तौर पर आंशिक रूप से ही सही पक्षपातपूर्ण होगा। किताब लिखा वाणभट्ट ने और नाम हर्षवर्द्धन का हुआ, चन्दवरदायी ने पृथ्वीराज रासों में रासो के माध्यम से शब्द भेदी वाण की चर्चा किया और विद्यापति ने राजा शिव सिंह और उनकी पत्नी लखिमा देवी के रूप लावण्य सौंदर्य वर्णन में कलम तोड़ दी तो अबुल फजल इससे पूर्ण अछुतें हैं, ऐसी बात नहीं है। शोधार्थी ने फतेहपुर सिकरी में मुगले आजम अकबर के राजमहल को देखा है बादशाह के शयनकक्ष से मात्र 100 गज की दूरी

पर फैजी और अबुल फजल का क्वार्टर आज भी विराजमान है। स्पष्ट है कि अपने निवास के सन्निकट ही अपने नवरत्न का आवास रखकर हर क्षण सहयोग, परामर्श और मंत्रणा बादशाह किया करता था। ऐसी स्थिति में बादशाह की गलतियों को उजागर न करना उनका परम् कर्त्तव्य था।

भारतीय इतिहास के साथ यह विडंबना है कि मूल ऐतिहासिक पुस्तकों की प्रारंभिक एवं मध्यकाल में कमी रही है। फलतः ऐतिहासिक श्रोत में साहित्य का सहारा लेते रहे हैं। संस्कृत, पाली, अरबी, फारसी आदि साहित्यिक ग्रंन्थों से इतिहास को निचोड़कर निकालने का क्रम रहा है। ऐसी परिस्थिति में अबुल फजल ने आइने अकबरी और अकबरनामा की रचना कर इतिहास के कोष को समृद्ध किया है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इन्होंने अपनी पुस्तक में इतिहास के विविध आयामों को बारीकी के साथ संजोया है। अकबरी शासन में आगरा एवं फतेहपुर सीकरी से लेकर सुदूर देहात की सारी प्रशासकीय व्यवस्थाओं का सजीव चित्रण किया है। पुस्तक में राजस्व, भूमि, मनसबदारी, अमीर, टकसाल, विभागों का वितरण, साहित्य, कला आदि का चित्रण ऐतिहासिक पटल पर किया गया है। खासकर सूबा, महाल आदि का जो विवरण प्रस्तुत किया गया है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि संचार एवं यातायात व्यवस्था के अभाव में भी कठिन परिश्रम कर अबुल फजल ने तथ्यों एवं आँकड़ों को पुस्तक में तार्किक ढंग से संजोया है जो तारीफे काबिल है। यों अबुल फजल दरबारी बनने का इच्छुक व्यक्ति नहीं था वरना् वह पिता एवं अग्रज के परामर्श के पश्चात् इसे स्वीकार किया। अबुल फजल के धार्मिक वार्तालाप के कारण भी उनके विचारों में साफगोई आयी जिसकी स्पष्ट झलक उनकी पुस्तकों में मिलती है। इतिहास लेखन के क्रम में उसके दार्शनिक प्रवृत्ति की झलक मिलती है उसने क्षुद्रता की जगह गंभीरता को अपनाया। उसके इतिहास लेखन का मुख्य आधार सामान्य परिणाम और दार्शनिक विचार पर आध ाारित है। अकबरनामा में अबुल फजल कहता है– उन्होंने थोड़े से विशिष्ट लोगों के लिए लिखा है और अगर उनके युग के प्रबुद्ध वर्ग का बहुमत उनकी भाषा और शैली को नहीं समझ पाता तो इसका इनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ने वाला।

इतिहासकार अबुल फजल के प्रमुख ग्रंथ आइने अकबरी और अकबरनामा के अध्ययनोपरांत हमें आभासित होता है कि फजल वस्तुतः मुक्त चिंतक था और किसी भी ऐतिहासिक समस्या के निराकरण में बुद्धि का सहारा लेता था। वह कभी धार्मिक पुस्तक अथवा रीति रिवाज के पेंच में नहीं फँसता था। नकल करने वालों एवं रूढ़िवादियों से वह परहेज रखता था। उसका तर्क था कि कानून और धर्म की पुस्तकें, पुरानी होने के साथ उसकी प्रासंगिकता भी समाप्त हो जाती है।

इतिहास और इतिहास लेखन संबंधी अपने विचारों को अबुल फजल ने अकबरनामा के दूसरे खण्ड में कुछ विस्तार से रखा है। उनके वर्णन से लगता है कि धर्म और दर्शन की ओर लंबे समय तक उनका बौद्धिक झुकाव रहा। उनके लिए इतिहास का कोई आकर्षण न था और वे इसे शायद ही कोई महत्व देते थे। उनकी

दृष्टि में यह किसी पौराणिक गाथा से हरगिज बेहतर नहीं। इतिहास का अध्ययन करना व्यर्थ और समय की बर्बादी है। इसके अध्ययन से सत्य की सिद्धि नहीं होती। फिर, पहले लिखे गए इतिहासों में अनेक दोष है। वे स्वार्थी और खुदगरज इंसानों द्वारा लिखे गए हैं जिन्होंने व्यक्तिगत लाभ के लिए गलत वक्तव्यों को दर्ज किया और सत्य को झूठ से मिलाया। जो सीधे–सादे और ईमानदार लेखक गुजरे हैं वे भी नेक इरादोंवाले भोलाराम थे, और वे कम इत्तलाआत भी रखते थे। फलस्वरूप उनके वर्णन मूर्खता से भरे और हास्यास्पद है। इसके अलावा, समय के साथ–साथ मूल स्त्रोत गायब भी हो चुके है। इतिहास–लेखन की यह एक बड़ी बाधा है, खासकर तब जबकि इतिहासकारों में आलोचनात्मक छानबीन की भावना न हो। फिर, कुछ इतिहासकारों ने अपनी ओर से भी कुछ जोड़ा है, इसलिए इतिहास के नाम पर झूठी और अप्रमाणिक बातें भी प्रचलित है। आलोचनात्मक दृष्टि न होने के कारण उन्होंने अतीत के प्रति एक ऐसा रवैया अपनाया, जो भ्रामक है और जिससे जनता का बहुत नुकसान हुआ है।9

अबुल फजल के इतिहास लेखन का आधारभूत तत्व पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों से भिन्न था, क्योंकि पूर्ववर्ती लेखकों ने धर्म आधारित इतिहास प्रस्तुत करने की कोशिश की है। भारतीय इतिहास लेखन ने हिन्दू एवं इस्लाम की चर्चा कर मूल तत्वों से भिन्न इस्लाम के इतिहास को उजागर करने का भरसक यत्न किया जो अबुल फजल के अनुसार तर्क संगत प्रतीत नहीं हुआ। पूर्व के इतिहासकारों ने जन सामान्य को गुमराह करने की कोशिश की और भारतीय समाज को क्षति पहुँचाया किंतु अबुल फजल ने पूर्व के इतिहास लेखन की पद्धति में आमूल चूल परिवर्त्तन कर सत्यता एवं तर्क के आधार पर इतिहास लेखन किया जो कट्टरपंथियों को नागवार लगा। पूर्व के इतिहासों को दार्शनिकों एवं ज्ञानियों के विचारों से विलग रखा। फलतः एक पक्षीय इतिहास लेखन होता रहा। इसकी जगह अबुल फजल ने जिस इतिहास का लेखन किया वह बुद्धि, वृद्धि एवं वास्तविकता का आभास कराता है। उनके अनुसार सत्य को साबित करना इतिहासकार का परम् उद्देश्य होना चाहिए जो बुद्धि और विवेक से ही संभव है। फजल का कहना था कि बुद्धि स्वयं इन्द्रियों खासकर आँख और कान के द्वारा रोशनी प्राप्त करती है। सही अर्थो में अतीत का व्यक्तियों के माध्यम से वर्णन सुनकर तार्किक व्याख्या से समृद्धि आती है।

संदर्भ :

1. डॉ0 शिवमंगल राय – गाजीपुर का इतिहास – प्रस्तावना
2. राहुल सांकृत्यायन – अकबर, पृष्ठ 106–107
3. मौलाना मोहम्मद हुसैन आजाद – अकबरी दरबार, पृष्ठ–57
4. मो0 हुसैन आजाद (अनुवादक– रामचंद्र वर्मा)–अकबरी दरबार खण्ड–3, पृष्ठ–73
5. मआसिरूल उमरा भाग – 1, पृष्ठ – 265
6. बी0 ए0 स्मिथ – अकबर द ग्रेट, मुगल इम्पेरर, पृष्ठ – 302
7. नोमान अहमद सिद्दीकी – मध्यकालीन भारत (सं0 इरफान हबीब), पृष्ठ – 82
8. तथैव, पृष्ठ – 83 9. तथैव, पृष्ठ – 8

****